विचार बिन्दु

काम से शोक उत्पन्न होता है। –धम्मपद

सोशल मीडिया हमारे समय की बहुत बड़ी ज़रूरत और नेमत है!

अनगिनत बार दुहराया गया और सत्य को अभिव्यक्त करता वाक्य है: **मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।** वैसे इस वाक्य में से मनुष्य को निकाल भी दें तो कोई ज़्यादा फ़र्क़ नहीं पडने वाला क्योंकि प्राणी प्रकृत्या सामाजिक होता है। यह बात अलग है कि अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य की सामाजिकता अधिक मुखर और बहु आयामी होती है। मनुष्य के पास अपने भावों की सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति के लिए जो अत्यंत विकसित भाषा है, अन्य प्राणियों के पास वह उतनी विकसित अवस्था में नहीं है। इसलिए वे जहां बहुत स्थूल अभिव्यक्तियों से ही अपना काम चलाते हैं, मनुष्य न जाने कब से अर्जित और जतन पूर्वक परिमार्जित भाषा के माध्यम से अपने भावों की सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति कर पाता है। यही सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति उसकी सामाजिकता को अधिक सुदृढ और अर्थपूर्ण भी बनाती है।

मनुष्य सामाजिक होने के साथ-साथ विकास शील प्राणी भी है और मानवता का इतिहास इस बात का गवाह है कि उसने अपनी परिस्थितियों और जीवन स्थितियों को अनवरत बदला व बेहतर बनाया है। आदि मानव से आज के मानव तक की यात्रा उसके विकास की महागाथा है। आज हम जिन स्थितियों को बहुत सहज मानकर चलते हैं वे पचास साल पहले कल्पनातीत थीं। लेकिन इन सारे बदलावों के कारण हमें केवल सुख ही मिला हो, ऐसा नहीं है। इनकी वजह से हमारे समाने बहुत सारी चुनौतियां भी पैदा हुई हैं। अगर सामाजिकता के संदर्भ में ही इन चुनौतियों को देखें तो हम पाएंगे कि आज सामाजिकता का निर्वाह करना उतना आसान नहीं रह गया है जितना आसान वह चार पांच दशक पहले था। कल तक जो लोग एक छोटे-से गांव में अपनी ज़िंदगी बिता लेते थे आज उन्होंने पूरी दुनिया को एक गांव में तबदील कर अपना बना लिया है। भौतिक रूप से हम अपनों से बहुत दूर हो गए हैं। परिवहन के साधन बढ़े हैं तो उनसे भीड भी बढ़ी है। भौतिक समृद्धि आई है तो उसका दबाव हमारे समय पर भी पड़ा है और हम पाते हैं कि हमारे पास पहले की तुलना में बहुत कम मुक्त समय रह गया है। ऐसी अनेक बातें हैं।

इन सब बदलावों का सीधा परिणाम यह हुआ है कि आज हम उनसे, जो बहुत अपने हैं, मिलने को भी तरस गए हैं। हमारे पास इतनी फ़ुर्सत और सुविधा नहीं है कि जिनके साथ कुछ वक़्त गुज़ारना चाहते हैं उनके पास जाकर अपना मनचाहा कर सकें। यहां तक कि एक ही शहर में-और शहर अब खूब फैल भी गए हैं-किसी अपने के पास जाना भी कठिन होता जा रहा है। लेकिन मनुष्य की जीवट और उसकी नवोन्मेषकारी प्रतिभा को सलाम कि उसने इन सब समस्याओं का बहादुरी और सफलतापूर्वक सामना किया है। चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने की जुगत का एक महत्वपूर्ण घटक है सोशल मीडिया। अगर यह कहा जाए कि आज का समय सोशल मीडिया का समय है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारे चारों तरफ जो लोग हैं वे, उनमें से ज़्यादातर सोशल मीडिया के किसी न किसी रूप का उपयोग करते हुए देखे जा सकते हैं, और यह उपयोग बढ़ता ही जा रहा है। सोशल मीडिया के नित नए रूप हमारे सामने आ रहे हैं और हम बड़े उत्साह से उनको लपकते नज़र आते हैं।

मेरा ऐसा मानना है कि यह सोशल मीडिया हमारे बदले परिवेश की ज़रूरतों की देन है। अगर हम आमने-सामने किसी से नहीं मिल सकते तो कोई बात नहीं। तकनीक के रथ पर सवार होकर तो उस तक जा सकते हैं या उसे अपने पास बुला सकते हैं। ऐसा करना समय की बहुत बड़ी मांग है। बहुत लोग हैं जो इस सोशल मीडिया को निरर्थक मानते हैं। उनका तर्क यह होता है कि भले ही आप सोशल मीडिया पर हज़ारों अपनों की भीड़ इकट्ठी कर लें, जब आप पर कोई विपदा आन पड़ेगी तो इन हज़ारों में से कोई एक भी आपकी मदद के लिए आगे नहीं आएगा। एक हद तक तो यह बात सही है भी। लेकिन क्या इससे सोशल मीडिया की उपादेयता खारिज हो जाती है? कम से कम मैं तो इस बात को मानने को तैयार नहीं हूं। और मेरे पास अपने तर्क हैं।

मेरा मानना है कि अपनी सारी सीमाओं के बावजूद सोशल मीडिया निरर्थक नहीं है। एक उदाहरण यही देखें कि लोग अपने निजी जीवन के सुख दुख की सूचना इस सोशल मीडिया पर देते हैं और हम हर पल यह देखते हैं कि कि पलक झपकते ही अनगिनत लोग उनके सुख या दुख में शामिल हो जाते हैं। उनमें से अनेक ऐसे होते हैं जिनसे न कभी वे मिले हैं और न ही शायद कभी मिलेंगे। लेकिन वे भी उनके सुख दुख के भागीदार बनते हैं। यह मामूली और उपेक्षणीय बात नहीं है। पहले ऐसा कब होता था कि हमारे जन्म दिन या विवाह की वर्षगांठ पर इतने सारे लोग बधाइयां देते थे? इसी तरह जैसे ही आप सोशल मीडिया पर अपनी कोई समस्या पोस्ट करते हैं बहुत सारे लोग आपके लिए समाधान लेकर हाज़िर हो जाते हैं। उनमें वे लोग भी होते हैं जिनका व्यक्तिशः आपसे कोई परिचय नहीं होता, फिर भी वे आगे बढ़कर आपकी मदद करते हैं। अगर किसी को किसी नए शहर में भी कोई दिक्कत होती है, किसी को किसी ख़ास और दुर्लभ ब्लड ग्रुप के रक्त की ज़रूरत होती है, अनजाने लोग भी मदद को आगे आ जाते हैं। अंततः यह बीते समय का समकालीन रूपांतरण ही तो है।

> **सोशल मीडिया पर हमें वैचारिक टकराव से परहेज़ बरतना चाहिए। बेशक विचार-विमर्श वहां हो, लेकिन उसे शालीनता की परिधि में सीमित रखा जाना चाहिए। अगर कोई शालीनता की सीमा रेखा का उल्लंघन करे तो बजाय उसको उसी की भाषा में जवाब देने के उस विवाद से अलग हो जाना चाहिए। हमने अपनी बात कह दी, इतना पर्याप्त होना चाहिए।**

इधर सोशल मीडिया एक और भूमिका बहुत अच्छी तरह से निबाह रहा है। वह समाचार प्रेषण के त्वरित माध्यम के रूप में सामने आ रहा है। बहुत सारी ख़बरें जन संचार माध्यमों में जगह नहीं पाती हैं। वे सोशल मीडिया के माध्यम से सम्बद्ध लोगों तक पहुंच जाती हैं। हम रोज़ ही देखते हैं कि कला संस्कृति आदि की दुनिया के लोगों के बारे में ख़बरों को मुख्य धारा के मीडिया में प्रायः जगह नहीं मिलती है। वे ख़बरें इस मीडिया के माध्यम से हम तक तुरंत पहुंच पाती हैं। इतना ही नहीं, जैसे-जैसे सरकारें अपने विरोध वाली या उन ख़बरों को जो उनके अनुकूल न हों, विभिन्न तरीकों से सामने आने में रोकने में अधिकाधिक सक्रिय होने लगी हैं, सोशल मीडिया एक वैकल्पिक मीडिया के रूप में उभर कर उन ख़बरों को भी सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाह रहा है। इस तरह सोशल मीडिया जनतंत्र को पुष्ट करने में भी अपना योग दे रहा है। सौभाग्य से अब तक सरकारों इस मीडिया पर अपना शिकंजा कसने में कामयाब नहीं हुई हैं।

यह सही है कि इन माध्यमों का दुरुपयोग भी कम नहीं हो रहा है। यह भी कि इन माध्यमों की अपनी अंतर्निहित सीमाएं भी हैं। इन दोनों बातों से मिलकर जो परिदृश्य बनता है वह कुछ चिंताएं भी उत्पन्न करता है। एक तो यह कि हममें से बहुतों को इन माध्यमों को बरतने का शऊर नहीं है। हममें से बहुत सारे लोग संकीर्णता और आत्म मुग्धता के मारे हैं। हमें अपने सिवा कुछ और दिखाई ही नहीं देता है। लोग अपनी बातों, जिनमें बहुत सारे बेहद निजी होती हैं, में आपको टैग कर करके आपका जीना हराम करते रहते हैं। इनके अलावा, यह क्योंकि त्वरित माध्यम है, इसमें आपको अपनी बात बहुत सोच समझकर कहनी चाहिए, लेकिन बहुत सारे लोग ऐसा नहीं करते हैं और वे बदमज़गी पैदा कर देते हैं। शालीनता से अपनी बात कहने को लोग कमज़ोरी समझ लेते हैं और उठा आक्रामक तथा अभद्र तरीके से बात कहने वालों को उनके चाहने वाले बेबाक, बेख़ौफ जैसे विशेषणों से नवाज़ कर चने के झाड पर चढा देते हैं और वे इसी को अपनी विशेषता मान और अधिक अशालीन अभिव्यक्तियां करने लगते हैं।

इधर जो सबसे बडी बात हुई है वह यह कि हमारे समाज में सहिष्णुता बहुत कमज़ोर हुई है। अपने से भिन्न सोच को ससम्मान स्वीकार करने और उसे उचित मान देने का हमारा स्वभाव अतीत होता जा रहा है। मेरा सोच, मेरी विचारधारा, मेरी पसंद, मेरी पार्टी, मेरा नेता – बस ये ही ठीक और सही हैं, बाकी सब ग़लत और अवांछित हैं। उन्हें तो बने रहने का ही कोई हक़ नहीं है, यह सोच बहुत तेज़ी से फैलता जा रहा है। भारतीय समाज पहले कभी इतना असहिष्णु नहीं था। मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना वाले समाज में हर विचार का सम्मान था। अब बहुत तेज़ी से हम विविधता को छोड एकरूपता के पक्षधर बनते जा रहे हैं। समाज में यह प्रवृत्ति भले ही उतनी नज़र न आए, सोशल मीडिया पर यह अपने बहुत कर्कश और अभद्र रूप में नज़र आती है। इस प्रवृत्ति को विभिन्न राजनीतिक दलों के आईटी सेल्स और उनकी वेतनभोगी सेनाओं ने खूब हवा दी है। ये लोग एक और ग़लत हरकत करते हैं और वह यह कि अपने मत को लेकर हर कहीं घुस और पिल पड़ते हैं। इन्हें यह कौन समझाए कि सोशल मीडिया का मतलब यह नहीं है कि आप कहीं भी घुस जाएं और पिल पड़ें। उसकी भी अपनी मर्यादा है। यह बहुत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है।

मेरा यह विचार है कि सोशल मीडिया पर हमें वैचारिक टकराव से परहेज़ बरतना चाहिए। बेशक विचार-विमर्श वहां हो, लेकिन उसे शालीनता की परिधि में सीमित रखा जाना चाहिए। अगर कोई शालीनता की सीमा रेखा का उल्लंघन करे तो बजाय उसको उसी की भाषा में जवाब देने के उस विवाद से अलग हो जाना चाहिए। हमने अपनी बात कह दी, इतना पर्याप्त होना चाहिए। यह आठाह और अपेक्षा कभी नहीं की जानी चाहिए कि हमने जो कहा है उसी को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार किया जाएगा। यह सोचना चाहिए कि क्या पता हम ही ग़लत हों, और सामने वाला सही हो। अगर हम इतनी उदारता बरत सकें तो ही हमें सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना चाहिए। उसे युद्ध का मैदान बनाना न हमारे हित में है और न समाज के हित में।

मेरा तो स्पष्ट मत है कि अपनी सारी सीमाओं और हममें से अनेक द्वारा किए जा रहे उसके दुरुपयोग के बावजूद सोशल मीडिया हमारे समय की बहुत बड़ी ज़रूरत और नेमत है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

साम्प्रदायिक सद्भावना का तीर्थ है मसूरिया बाबा मन्दिर

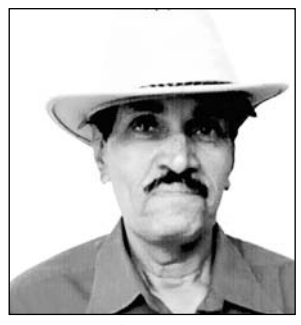

मिश्रीलाल पंवार

राजस्थान की वीर धरा पर स्थित बाबा रामदेव पीर का मन्दिर साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए देश विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। बाबा रामदेव पीर का मन्दिर जैसलमेर जिले के रामदेवरा में स्थित है। बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ नाम के महात्मा थे। उनका मन्दिर जोधपुर के मसूरिया पहाड़ी पर स्थित है।

बाबा रामदेव के गुरु बाबा बालीनाथ का यज्ञ प्राचीन मन्दिर आज जोधपुर ही नहीं वरन् पूरे देश में खूब जाना पहचाना जाता है। जोधपुर रेलवे स्टेशन से कोई चार किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में, मसूरिया पहाड़ी पर स्थित यह मन्दिर 'मसुरिया बाबा' के नाम से प्रख्यात है। यहां वर्ष भर दर्शनार्थियों की रेलमपेल रहती है। भादो मास की चाँदनी दूज को यहां विशाल मेला लगता है। देश भर से लाखों श्रद्धालु यहां माथा टेकने आते हैं। यह मन्दिर साम्प्रदायिक सद्भावना की अपने आप में एक मिशाल है।

बाबा बालीनाथ का प्रारम्भिक जीवन जैसलमेर जिले के पोकरण गांव में ही बीता। वे पोकरण राजघराने के गुरु थे। बाबा बालीनाथ का धुणा पोकरण में ही था। वे वहीं तप करते थे। एक समय पोकरण व आस-पास के क्षेत्रों में भैरव नामक नरभक्षी राक्षस का आतंक छाया हुआ था। यह नरभक्षी मनुष्य के खून का प्यासा रहता। भैरव के भय से आसपास के कई गांवो के निवासी अपना घरबार छोड़कर अन्यत्र चले गए। मगर बाबा बालीनाथ ने भैरव से डर कर अपना स्थान नहीं छोड़ा।

तब एक दिन बालक रामदेव खेलते हुए बालीनाथ के धुणे जा पहुंचे। वहां उन्होंने नरभक्षी भैरव का वध कर उसके आंतक में लोगों को मुक्ति दिलाई।

कुछ समय बाद पोकरण के ठाकुर अजमल ने अपनी पुत्री लाच्छां बाई की शादी की तो पोकरण की जागीर दहेज में दे दी। इस पर बालीनाथजी रुष्ठ हो गए। वे पोकरण से निकल पड़े। घूमते-घूमते वे जोधपुर की तरफ आ गाए। जब वे मसूरिया क्षेत्र में पहुंचे तो वहां का प्राकृतिक वातावरण देख अभिभूत हो गए। वहां पहाड़ी में बहुत बड़ी गुफा भी थी। गुफा के पास ही सुन्दर जलाशय भी था। आस-पास घना वन क्षेत्र था। कोलाहल से दूर शान्त जगह देख कर उन्होंने यहीं पर अपना ठिकाना बना लिया। उस समय जोधपुर की स्थापना हुए अधिक समय नहीं हुआ था। शहर की आबादी किले के आस-पास तक ही सिमित थी। मसूरिया क्षेत्र में भयंकर वन था। मसूरिया पहाड़ी बिल्कुल एकान्त में थी। बाबा बालीनाथ निर्विघ्न रूप से यहां तप करते थे। शहरी लोग यदा-कदा अपने दुःख-दर्द लेकर उनके पास आते रहते। बाबा धैर्यपूर्वक सबकी बात सुनते। बाद में अपने धूणे से चुटकी भर भभूत लेकर उसे दे देते। धीरे-धीरे लोगों की वहां भीड़ बढ़ने लगी। आने वाले श्रद्धालुओं के जीवन में चमत्कार-सा होने लगा। जो भी मन में मुराद लेकर आता, उसकी मनोकामना पूर्ण होती। तपस्या के साथ-साथ लोक सेवा करते बाबा वालीनाथ एक दिन चिरनिद्रा में सो गए। कुछ किवदन्तियों के अनुसार उन्होंने मसूरिया पहाड़ी पर जीवित समाधि ली थी। बाबा की समाधि के बाद भक्तजनों का यहां आना अनवरत जारी रहा, जो आज दिन तक जारी है।

आज कल तो हालत यह है कि यहां वर्ष भर भक्तों की भीड़ लगी रहती है। भादो मास में भरने वाले मेले में तो दर्शनार्थियों को घण्टों पक्तियों में खड़ा रहने के बाद मन्दिर दर्शन सुलभ ही पाते हैं। कहते हैं रामदेव के मन्दिर रूणेचा जाने वाले श्रद्धालुओं को पहले मसूरिया बाबा के मन्दिर पर धोंक देना आवश्यक है। भक्तों की यात्रा तभी सफल मानी जाती है, जब रामदेवरा जाने वाला पहले मसुरिया बाबा के यहां माथा टेक कर अपनी हाजरी दर्ज करा ले।

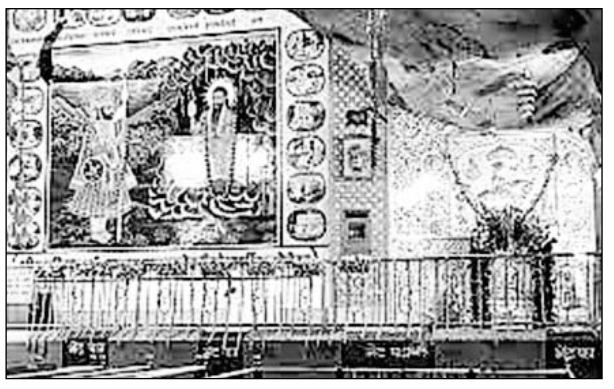

मसूरिया बाबा के मन्दिर में भी सभी धर्मों के लोग दर्शनार्थ आते हैं। मन्दिर की भव्यता देखते बनती है। जोधपुरी छितर पत्थर से निर्मित इस मन्दिर का पृष्ठ भाग देखते बनता है। मन्दिर से देखने पर जोधपुर शहर का विहंगम दृश्य नजर आता है। इस मन्दिर की व्यवस्था पीपा क्षत्रिय समाज द्वारा संचालित एक ट्रस्ट करता है।

मन्दिर पहाड़ी की तलहटी में एक चमत्कारिक जलाशय है। बाबा के भक्तों में यह परचा नाडी के नाम के नाम से प्रसिद्ध है। यह परचा नाडी भी जातरूओं के लिए श्रद्धा का केन्द्र है। भादौ माह में भरने वाले मेले में आने वाले जातरू यहां स्नान कर अपने को धन्य मानते हैं। भक्तों का मानना है कि यहां स्नान करने वाले की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। लोगों का यह भी मान्यता है कि इस परचा नाड़ी में स्नान करने से बुरी आत्माओं से मुक्ति मिलती है।

मिश्रीलाल पंवार,
वरिष्ठ लेखक एव पत्रकार

लक्ष्यराज ने अमेरिका में जीता गोल्फ खिताब

गोल्फ खिलाड़ी लक्ष्यराज पूनिया।

सादुलपुर, (निसं)। गुलाबी नगरी के लक्ष्यराज पूनिया ने अमरिका के फीनिक्स सिटी स्थित एल्जोना स्टेट यूनिवर्सिटी गोल्फ प्रतियोगिता में शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए, 64 आठ अंडर के स्कोर के साथ खिताब जीता।

फ्रेडिक्स टी वुड गोल्फ कोर्स पर लक्ष्य ने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 9 बर्डी के साथ बैक 9 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 6 बर्डी मारी, जिसमें होल 12 व 13 तथा 15,16,17 पर बैक टू बैक रही। गौरतलब है कि राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद की अध्यक्ष, ओलंपियन व अर्जुन अवॉर्ड विजेता डॉ. कृष्णा पूनिया और राज्य क्रीडा परिषद के मुख्य खेल अधिकारी वीरेन्द्र पूनिया के सुपुत्र लक्ष्यराज फाइनेंस बिजनेस के तृतीय वर्ष के छात्र और राजस्थान के उभरते गोल्फर हैं। तथा इन्होंने हाल ही में रामबाग गोल्फ क्लब जयपुर में किसान गोल्फ कप भी जीता था।

> ■ **खेल परिषद् की अध्यक्ष डॉ. कृष्णा पूनिया के सुपुत्र हैं लक्ष्यराज**

मिट्टी की बनी 500 गणेश प्रतिमाएं निशुल्क वितरित

कोटा, (निसं)। पगमार्क फाउंडेशन ने अनंत चतुर्दशी के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अनोखी पहल करते हुए मिट्टी की बनी 500 गणेश प्रतिमाएं निशुल्क वितरित करने का निर्णय किया है जिनसे गणेश चतुर्दशी के दिन विसर्जन के बाद पौधे प्रस्फुटित होंगे। पगमार्क फाउंडेशन का कहना है भगवान को रूप बदलते हुए किसी ने नहीं देखा, सिर्फ किस्से, कहानियों और कथाओं में ही सुना होगा लेकिन इस साल गणेश महोत्सव के दौरान ऐसा होने जा रहा है। गणेश चतुर्थी पर स्थापित होने वाले गणपति 10 दिन के महोत्सव के बाद रूप बदलेंगे और पौधे का रूप धारण कर प्रदूषण रूपी राक्षस को परास्त करने का संदेश देंगे।

> ■ **'पगमार्क फाउंडेशन गणेश जी की इको फ्रेंडली प्रतिमाएं तैयार कर रहा है'**

पगमार्क फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष देवव्रत सिंह हाड़ा ने बताया कि इस खास मौके पर पगमार्क फाउंडेशन इको फ्रेंडली प्रतिमाएं तैयार कर रहा है। इन प्रतिमाओं को लोगों को वितरित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देंगे। पगमार्क फाउंडेशन के संयोजक निमिष गौतम ने बताया कि यह प्रतिमाएं मिट्टी से तैयार की गई हैं, यह 10 इंच के करीब ऊंची होंगी, इनको मिट्टी के साथ विभिन्न प्रकार के फल व सब्जियों के बीजों से तैयार किया गया है। गणपति के नैन नक्शों को इन्ही रंग-बिरंगे बीजों से सजाया भी गया है। देवव्रत हाड़ा ने बताया कि लोग आमतौर पर जलाशयों में प्रतिमाओं को विसर्जित करते है, लेकिन इनको गमलों में विसर्जित किया जाएगा। जल अर्पित करने से बीज धीरे-धीरे अंकुरित होंगे और पौधे का रूप धारण कर लेंगे। फाउंडेशन के सनी मलिक ने बताया कि पीओपी की मूर्तियों का बहिष्कार जरूरी है। हर साल सैकड़ों प्रतिमाएं विसर्जित की जाती है, इससे पानी प्रदूषित होता है। प्रतिमाओं में इस्तेमाल किए जा रहे रसायनिक रंगों से जल जीवों पर खतरा मंडराता है। इसी को देखते हुए छोटी सी इको फ्रेंडली गणपति प्रतिमाएं बनाई गई है। प्रतिमाओं में छायादार वृक्ष के बीज लगाए गय है ताकि विसर्जन के बाद भी गणेश महोत्सव यादगार हो जाए। फाउंडेशन के यतेन्द्र सिंह नागदा ने बताया कि प्रतिमाओं में मिट्टी, गोंद, गैरू, चुना, रूई का इस्तमाल किया गया है।

पगमार्क फाउंडेशन के कार्यक्रर्ता मिट्टी की गणेश प्रतिमा बनाने में जुटे।

'गणेश मेले में भंडारा संचालन के लिए अनुमति जरुरी'

सवाई माधोपुर, (निसं)। जिले के रणथंभौर दुर्ग में 30 अगस्त से 1 सितंबर तक भरने वाले गणेश मेले में यहां लाखों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए भंडारा लगाने वाले संचालकों की बैठक जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। बैठक में सवाई माधोपुर विधायक दानिश अबरार ने कहा कि गणेश मेले में भंडारा संचालित करने वाले साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि भंडारा संचालन करने वाले सभी लोग नगर परिषद से अनुमति लेने के बाद ही भंडारा लगाएं।

जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा बार-बार प्रचारित करने के बाद भी गणेश मेले में भंडार लगाने वालों के लिए 50 प्रतिशत लोगों ने ही अनुमति लेने के लिए आवेदन किया है। भंडारा संचालन के लिए सभी को अनुमति लेना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति नियमों की अवहेलना करता हुआ पाया जाएगा तो उस पर कार्रवाई की जाएगी।

जिला पुलिस अधीक्षक सुनील कुमार विश्नोई ने कहा कि भंडारों में श्रद्धालुओं के बीच आने वाले असामाजिक तत्वों का भी हमें ध्यान रखना होगा।

नगर परिषद आयुक्त नवीन भारद्वाज ने कहा कि भंडारा संचालन में 5 सफाई कर्मी वर्दी में और तीन ड्रम का होना आवश्यक है। रोचक बात यह रही कि गणेश मेले में भंडारा लगाने के लिए स्वयं विधायक दानिश अबरार, पूर्व संसदीय सचिव जितेंद्र गोठवाल, सभापति विमल चंद महावर एवं पूर्व उपसभापति राजेश गोयल ने भी भंडारा संचालन के लिए नियमानुसार प्रशासन से स्वीकृति लेकर आमजन के लिए एक अच्छा उदाहरण पेश किया है। यह उन भंडार संचालकों के लिए प्रेरणा लेने की बात है, जो बिना अनुमति भंडारा संचालन के लिए प्रयास कर रहे हैं।

भंडारा संचालकों की कलेक्ट्रेट सभागार में हुई बैठक में विधायक दानिश अबरार ने भाग लिया।

> ■ **विधायक दानिश अबरार, पूर्व संसदीय सचिव जितेंद्र गोठवाल, सभापति विमल चंद महावर एवं पूर्व उपसभापति राजेश गोयल ने भी भंडारा संचालन के लिए प्रशासन से स्वीकृति ली**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 29 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीय तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 11:04 तक, साध्य योग रात्रि 1:03 तक, कौलव करण दिन 3:11 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग रात्रि 11:04 से आरम्भ होगा। आज तेलाधर तपस्या (जैन) मेला रूणीचा रामदेव 9 दिन का आरम्भ होगा। आज से सकट मु.मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:43 तक, शुभ 9:18 से 10:33 तक, चर 2:03 से 3:17 तक, लाभ-अमृत 3:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:08, सूर्यास्त 6:47

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य के संबंध में योजना बनेगी। आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले सुसंदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

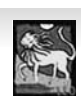

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि का भय है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।